रात्रीक्लास ओमशांति शिवबाबा याद है? 5.2.68

तुम बच्चों के पास जो समाचार है दुनियां में और कोई के पास नहीं है। भल कितने भी अखबार आदि पढ़ते हैं सब गपोड़े ही मारते हैं। एक बाप ही सत्य बताते हैं। बड़े2 महर्षि आदि क्या करते हैं यह सभी रिद्धी–सिद्धी है। दांत खराब हो तो योगबल से दांतों को देखने से अच्छी हो जाती। ऐसे तो ढेर हैं। बच्चे समझ सकते हैं यह तो बेहद की दुनियां को बदलने की बातें हैं। ऐसी2 बातों में मनुष्य कितनी दिलचस्पी लेते हैं। वह महर्षि को कहते हैं हमारी आदतें मिटा दो। महर्षि फिर उन्हों को कहते हैं तुम खाते–पीते चलो फिर आपे ही आदत मिट जावेगी। कितने बेसमझ पत्थर बुद्धि हैं। सतयुग में हैं पारस बुद्धि ,सतोप्रधान। कलियुग में पत्थरबुद्धि तमोप्रधान। क्या सुख दे सकते हैं। याद सभी मनुष्य मात्र एक को ही करते हैं। शिवबाबा ही सबका बाप है। सिवाय बाप के बाकी सभी वर्थ नॉट अपेनी हैं। देवता तो कोई है नहीं। बच्चे जानते हैं अभी सतयुग है नहीं। सतयुग के लिए हम पढ़ते हैं। बाबा है ही सतयुग स्थापन करने वाला। बेहद के बाप से जरूर सतयुग का वर्सा मिलेगा। भल कहे 40हजार पीछे बाप आवेंगे सतयुग बनाने। यह भी बतावे ना जब बाप आवेंगे तब ही हम वर्सा पावेंगे। इस समय नई दुनियां के लिए तुम नई बातें सुनते हो। बाप कहते हैं नई दुनियां में चलना है तो पवित्र बनना है। बाप सभी मनुष्य मात्र के लिए कहते हैं। मनुष्य से देवता बनेंगे। और धर्म होंगे ही नहीं। अपना पुरुषार्थ करते चलो। औरों का भी कल्याण करते चलो। सर्विस वृद्धि को पाती रहेगी। सेंटर्स खुलते रहते हैं। कई सेंटर्स हैं जहां ऐसे भी हैं जो अपना भी कुछ कल्याण नहीं करते हैं। प्रपजली न खुद समझेंगे , न दूसरों को समझावेंगे, न समझने देंगे। और ही तंग करते हैं। कहते हैं हम किसको सुख पाने न देंगे। ऐसे2 भी हैं जिसको .....खबर कहा जाता है। तुम डॉसे गॉड बनते हो। गॉड पढ़ावे फिर भी डॉगपना दिखावे तो क्या कहेंगे? भस्मासुर होते हैं ना। न खुद समझते हैं , न दूसरों को शांति से रहने ही देते हैं। कहा जाता है न आओ तो भी लड़ने लग पड़ते हैं। ऐसे2 असुर यज्ञ में विघ्न डालते हैं। वह क्या वर्सा पावेंगे। बाबा की मुरली तो सभी सुनेंगे।